International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 10-01-2024, Accepted: 03-02-2024, Published: 26-02-2024
Volume 10, Issue 1, 2024, Page No. 18-20

कबीर की काव्य रचनाओं में परमेष्वर का स्थान

सुमन रानी[1], मंजू[2]
[1] हिंदी विभाग, सनराइज विष्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान, भारत
[2] प्राध्यापक और अनुसंधान पर्यवेक्षक, हिंदी विभाग, सनराइज विष्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान, भारत

सारांश
कबीर ने परमेष्वर को सर्वव्यापक माना है। कबीर कहते हैं कि परमेष्वर को मिटाया नहीं जा सकता है। परमेष्वर सभी के दिलों में आत्मा के रूप में वास करते हैं। परमेष्वर व्यापक स्वरूप धारण करते हैं। परमेष्वर को अलग–अलग धर्मों में अलग–अलग नाम से बुलाते हैं। उन्हें हिंदू धर्म में बहुदेव वाद बुलाते हैं परंतु और धर्म में एक परमेष्वर को माना गया है। परमेष्वर का कोई विशेष स्थान नहीं, कोई ठिकाना नहीं, परमेष्वर कोई व्यक्ति या वस्तु नहीं है। परमेष्वर से तात्पर्य सर्वस्व, संपूर्ण अस्तित्व।

मूल शब्दः कबीर, परमेष्वर, ईष्वर, परमात्मा, समाज, काव्य रचनाओं, जीवन मूल्य, संसार, आदि

हिंदी साहित्य का इतिहास सदियों पुराना है। हिंदी साहित्य का दूसरा चरण भक्ति काल के नाम से भी जाना जाता है। इतिहास में भक्ति काल महत्वपूर्ण स्थान रखता है, इसकी समय अवधि १३७५ विक्रमी संवत से १७०० विक्रमी संवत तक की मानी जाती है। यह हिंदी साहित्य का श्रेष्ठ योग है।[५,३]

प्रस्तुत शोध का संबंध संत काव्यधारा के प्रमुख, महान कवि और समाज सुधारक कबीर दास से है। कबीर का जन्म सन १३९८ में काशी में लहरतारा तालाब में उत्पन्न कमल के पुष्प के ऊपर बालक के रूप में हुआ, ये जाति से जुलाहा थे और काशी में रहते थे। इनके गुरू का नाम रामानन्द था और युवावस्था में स्वामी रामानंद के प्रभाव से उन्हें हिंदू धर्म की बातें मालूम हुई। कबीर ने सन १५१८ में काशी के पास मगहर में देह त्याग दी। मगहर में कबीर की समाधि है। कबीर साहब सिकन्दर लोधी के समकालीन थे। कबीर साहब निरक्षर थे।[१,२] इनके निम्न दोहे से स्पष्ट है। मसि कागद छूयौ नहीं कलम गहयौ नहीं हाथ।[७],

कबीर साहब निरक्षर होते हुए भी एक महान् दार्शनिक थे, इसी कारण ही आज संत कबीर को याद किया जाता है। वे सभी इंसान को एक ही परमेष्वर की सन्तान मानते हैं।

जिस समय में वह रह रहे थे, उसके हिसाब से 'कबीर' एक असामान्य नाम था। ऐसा कहा जाता है कि उनका नाम काजी ने रखा था, जिन्होंने बच्चे के लिए उपयुक्त नाम खोजने के लिए कई बार कुरान खोला और हर बार कबीर पर समाप्त हुआ, जिसका अर्थ है 'महान', जिसका उपयोग किसी और के लिए नहीं बल्कि स्वयं परमेष्वर, अल्लाह के लिए किया जाता था।''[२, ४]

कवि के अनुसार परमेष्वर को धार्मिक स्थलों में नहीं पाया जा सकता, क्योंकि वह प्रत्येक प्राणी में निवास करता है। कवि कहते है कि परमेष्वर कहाँ है और तुम उसे कहाँ ढूँढ़ रहे हो वो तो तेरे पास तेरे प्रत्येक ष्वासों में है। परमेष्वर सभी के दिलों में आत्मा के रूप में वास करते हैं। परमेष्वर कोई व्यक्ति या वस्तु नहीं है। परमेष्वर से तात्पर्य सर्वस्व, संपूर्ण अस्तित्व। परमेष्वर व्यापक स्वरूप धारण करते हैं। उन्हें अलग–अलग धर्मों में उनको अलग–अलग नाम से बुलाते हैं।[२,४,१०] कबीर के अनुसार, एक ही परमेष्वर को राम, हरि, अल्लाह, रहीम और कई अन्य नामों से जाना जाता है। सभी को परमेष्वर के प्रति समर्पित रहना चाहिए और धार्मिक मतभेदों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। उन्होंने जाति व्यवस्था, मूर्ति पूजा और तीर्थयात्राओं को अस्वीकार कर दिया। कबीर एक व्यक्ति होने के बजाय व्यक्तित्व हैं। कबीर जो न हिन्दू हैं और न मुसलमान कबीर जो दुनियावी होने के बावजूद जाति–धर्म से ऊपर हैं। सभी धर्मों में परमेष्वर को पिता माना गया है।''[४,३]

साहित्य समीक्षा और अनुसंधान अंतराल

साहित्य समीक्षा करने पर पता चलता है कि कुछ शोधार्थियों ने कबीर की रचनाओं पर शोध किया है जैसे आधुनिक युग में कबीर की प्रासंगिकता, भारतीय काव्य शास्त्र कबीर का साहित्य, कबीर एक दार्शनिक कबीर काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन, कबीर के काव्य में विचार और कवितत्व, कबीर की काव्य भाषा, कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन, संत कबीर आधुनिक सन्दर्भ, संत कबीर और उनकी की साधना, संत कबीर के काव्य में युग चेतना, परंतु "कबीर की काव्य रचनाओं में परमेष्वर का स्थान" इस विषय पर कोई शोध नहीं मिलता है अतः शोधार्थी के लिए इस विषय पर शोध करना बहुत उपयोगी होगा, अतः यह विषय शोध के लिए चुन लिया गया है अतः शोधार्थी के लिए इस विषय पर शोध करना बहुत उपयोगी है।

शोध–प्रकृति

शोध डिज़ाइन खोजपूर्ण होने के साथ–साथ वर्णनात्मक भी है, द्वितीयक डेटा या द्वितीयक जानकारी प्राचीन साहित्य, कबीर के प्राचीन साहित्य, शोध पत्रों, शोध पत्रिकाओं, पीएचडी थीसिस, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, वेबसाइटों और अन्य स्रोतों से एकत्र की जाएगी। शोधकार्य में कहीं तुलनात्मक, कहीं विश्लेषणात्मक या कहीं विमर्शात्मक या कहीं–कहीं अन्यान्य शोध–प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

शोध के उद्देश्य

कबीर की काव्य रचनाओं में परमेष्वर का स्थान विषय पर अध्यन करना।

परमेष्वर को महत्व

कबीर साहब परमेष्वर की महिमा को उजागर करते हुए कहते हैंः

दुःख में सुमिरन सब करे सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे दुःख काहे को होय।।[७]

कबीर साहब जी कहते हैं कि दुःख के समय तो सभी परमेष्वर को याद करते हैं परंतु सुख में कोई याद नहीं करता। यदि सुख

में भी परमेष्वर को याद किया जाए तो दुख मनुष्य के जीवन में क्यों आएंगे।

कबीर, हाड़ चाम लहू ना मेरे, जाने कोई सतनाम उपासी।
तारन तरन अभय पद दाता, मैं हूं कबीर अविनाशी।।[१२]

कबीर साहेब जी इस में कह रहे हैं कि मेरा शरीर हड्डी और मांस का बना नहीं है, जिसको मेरा द्वारा दिया गया सतनाम और सारनाम प्राप्त है। वह मेरे इस भेद को जानता है। मैं ही सबका मोक्षदायक हूँ, तथा मैं ही अविनाशी परमेष्वर हूँ। कबीर की दृष्टि में परमेष्वर का स्वरूप अविनाशी है। कबीर के कहने का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार लकड़ी में अग्नि निवास करती है ठीक उसी प्रकार परमात्मा सभी जीवों के ह्रदय में आत्मा स्वरुप में व्याप्त है। परमेष्वर सर्वव्यापक, अजर–अमर और अविनाशी है। कबीर ने परमेष्वर के स्वरूप को अद्वैत रूप में ग्रहण किया। कवि ने ज्ञान प्राप्ति के लिए ईष्वर की सच्ची भक्ति करने का मार्ग सुझाया है। परमेष्वर की सच्ची भक्ति करने से तात्पर्य मंदिर मस्जिद या अन्य किसी धार्मिक स्थल पर भटकने से नहीं बल्कि स्वच्छ एवं निर्मल मन से परमेष्वर की सच्ची आराधना करने से है, अपने अंदर को परमेष्वर को पहचानने से है। सब स्वाँसों की स्वाँस में' से कवि का तात्पर्य यह है कि परमेष्वर कण–कण में व्याप्त हैं, सभी मनुष्यों के अंदर हैं। जब तक मनुष्य की साँस (जीवन) है तब तक परमेष्वर उनकी आत्मा में हैं। मन के निर्मल होते ही मनुष्य को परमेष्वर प्राप्ति की पूरी संभावना होती है, क्योंकि परमेष्वर स्वयं निगरुण और निर्मल है। इसलिए निर्मल आत्मा परमेष्वर को प्राप्ति कर लेती है। परमेष्वर की प्राप्ति ही तो जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है।उन्होंने परमेष्वर को सर्वव्यापक माना है। कबीर कहते हैं कि परमेष्वर को काटा या मिटाया नहीं जा सकता है।[८४]

क्या मांगुँ कुछ थिर ना रहाई, देखत नैन चला जग जाई।
एक लख पूत सवा लख नाती, उस रावण कै दीवा न बाती।[१५]

कबीर साहेब जी कहते हैं कि, यदि एक मनुष्य अपने एक पुत्र से वंश की बेल को सदा बनाए रखना चाहता है तो यह उसकी भूल है। जैसे लंका के राजा रावण के एक लाख पुत्र थे तथा सवा लाख नाती थे। वर्तमान में उसके कुल (वंश) में कोई भी घर में दीप जलाने वाला नहीं है। सब नष्ट हो गए। इसलिए हे मनुष्य, परमेष्वर से तू यह क्या माँगता है जिसका अस्तित्व स्थाई नहीं है।

सतयुग में सतसुकृत कह टेरा, त्रेता नाम मुनिन्द्र मेरा।
द्वापर में करुणामय कहलाया, कलयुग में नाम कबीर धराया।।[१६]

कबीर साहब जी कहते हैं कि, परमेष्वर चारों युगों में आते हैं। कबीर साहिब ने बताया है कि सतयुग में मेरा नाम सत सुकृत था। त्रेता युग में मेरा नाम मुनिंदर था द्वापर युग में मेरा नाम करुणामय था और कलयुग में मेरा नाम कबीर है।

कबीर, पत्थर पूजें हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार।
तातें तो चक्की भली, पीस खाये संसार।।[१८]

कबीर साहब जी हिंदुओं को समझाते हुए कहते हैं कि किसी भी देवी–देवता की आप पत्थर की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करते हैं जो कि शास्त्र विरुद्ध साधना है। जो कि हमें कुछ नही दे सकती। इनकी पूजा से अच्छा आप पत्थर की चक्की की पूजा कर लो जिससे हमें खाने के लिए आटा तो मिलता है। कबीर साहब ने कहा, कि हमें अपने हाथों से बनाए हुए देवी देवताओं की पूजा करने की बजाय उस परमेष्वर की आराधना करनी चाहिए जिसने हम सबको तथा, इस सारी सृष्टि को बनाया है।

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।[२०]

कबीर साहब हिंदुओं को समझाते हुए कहते हैं कि साधु की जाती नहीं पूछनी चाहिए, बल्कि ज्ञान की बात पूछनी चाहिए, क्योंकि असली मोल तो तलवार का होता है, म्यान का नहीं। हिंदुओं में फैले जातिवाद पर कटाक्ष करते हुए कहते थे, किसी व्यक्ति से उसकी जाति नहीं पूछनी चाहिए बल्कि ज्ञान की बात करनी चाहिए।

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।[१६]

कबीर साहब लोगों पर कटाक्ष करते हुए समझाते हैं कि जो लोग लम्बे समय तक हाथ में माला तो घुमाते है, पर उनके मन का भाव नहीं बदलता, उनके मन की हलचल शांत नहीं होती। कबीर जी कहते हैं कि हाथ की इस माला को फेरना छोड़ कर मन को सांसारिक आडंबरों से हटाकर भक्ति में लगाओ।

मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारम्बार।
तरवर से पत्ता टूट गिरे, बहुरि न लागे डारि।।[२१]

कबीर साहब हिंदू और मुस्लिम दोनों को मनुष्य जीवन का महत्व बताते हुए कहते हैं कि यह मानव जन्म पाना बहुत कठिन है, यह शरीर बार–बार नहीं मिलता, मनुष्य जीवन अनमोल है, ठीक उसी प्रकार जो फल वृक्ष से नीचे गिर जाता है वह दोबारा उसकी डाल पर नहीं लग सकता, इसी तरह यह मनुष्य मानव शरीर छूट जाने पर दोबारा मनुष्य जन्म आसानी से नहीं मिलता और पछताने के अलावा कुछ नहीं रह जाता, इसलिए हे मनुष्य परमेष्वर का ध्यान कर और आडम्बर में न पड़ा रहे।

पानी केरा बुदबुदा, अस मानस की जात।
एक दिना छिप जाएगा, ज्यों तारा परभात।।[१६]

कबीर साहब लोगों को नेकी करने की सलाह देते हुए कहते हैं कि यह मनुष्य जीवन क्षण भर का है, मनुष्य का यह जीवन पानी के बुलबुले के समान है, मनुष्य का शरीर क्षणभंगुर है, जैसे प्रभात होते ही तारे छिप जाते हैं, वैसे ही ये देह भी एक दिन नष्ट हो जाएगी, मनुष्य का अस्तित्व खत्म हो जाता है।

अध्ययन का निष्कर्ष

कबीर साहब कहते हैं कि हमें अपने हाथों से बनाए हुए देवी देवताओं की पूजा करने की बजाय उस परमेष्वर की आराधना करनी चाहिए जिसने हम सबको अर्थात् इस सारी सृष्टि को बनाया है। देवी–देवता की पत्थर की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करते हैं जो कि शास्त्र विरुद्ध साधना है जो कि हमें कुछ नही दे सकती, कबीर साहब कहते हैं इनकी पूजा से अच्छा आप पत्थर की चक्की की पूजा कर लो जिससे हमें खाने के लिए आटा तो मिलता है। वे कहते हैं दुःख के समय तो सभी परमेष्वर को याद करते हैं। परंतु यदि सुख में भी परमेष्वर को याद किया जाए तो मनुष्य के जीवन में दुख क्यों आएंगे। कबीर साहब कहते हैं कि मन को सांसारिक आडंबरों से हटाकर भक्ति में लगाओ। हिंदू और मुस्लिम दोनों को मनुष्य जीवन का महत्व बताते हुए कहते हैं कि यह मानव जन्म पाना बहुत कठिन है, यह शरीर बार–बार नहीं मिलता, मनुष्य जीवन अनमोल है, इसी तरह यह मानव

शरीर छूट जाने पर दोबारा मानव जन्म आसानी से नहीं मिलता और पछताने के अलावा कुछ नहीं रह जाता, इसलिए हे मनुष्य परमेष्वर का ध्यान कर और आडम्बर में मत पड़। मनुष्य का यह जीवन पानी के बुलबुले के समान है, क्षण भर का है, मानव देह भी एक दिन नष्ट हो जाती है, मनुष्य का अस्तित्व खत्म हो जाता है, इसलिए हे मनुष्य तू समय रहते परमेष्वर का ध्यान कर, क्योंकि मरने के बाद तू परमेष्वर की आराधना, परमेष्वर का ध्यान न करने पाएगा। हे मनुष्य तू परमेष्वर में मन लगा और सांसारिक वस्तुओं पर ध्यान न दें।

सन्दर्भ सूची

1. वेबैक मशीन एन्सिक्लोपेडिया ब्रितिनिका (२०१५), कबीर अर्चिवेद २०१५–०४–२६, अभिगमन तिथिः जुलाई २७, २०१५
2. हग थिंकर (१९६०). दक्षिण एशियाः ऐ सॉर्ट हिस्ट्री, हवाई प्रेस विष्वविद्यालय, पपृ. ७५ दृ७७ आई॰एस॰बी॰ऍन॰ ९७८–०–८२४८–१२८७–४, मूल से ३१ दिसंबर २०१३ को पुरालेखित, अभिगमन तिथि १२ जुलाई, २०१२.
3. कल्चर एंड कस्टम (२००२). हेंडरसन कारक इ, कार्ल हेंडरसन गर्सिया – ६ ७ ८ ., ग्रीन वुड पब्लिसिंग ग्रुप, इंडिया, इ.एस.बी.एन ६–३०५१३–३१३० पुरालेखित अभिगमन तिथी १२ जुलाई २०१२.
4. द सेंट्सः स्टडीज़ इन ए डिवोशनल ट्रेडिशन ऑफ़ इंडिया, डेविड लॉरेनज़ेन (संपादकः कैरिन शोमर और डब्ल्यू. एच. मैकलियोड, १९८७), मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स, आईएसबीएन ९७८–८१–२०८–०२७७–३, पेज २८१–३०२
5. "संत कबीर ने दुनिया को पढ़ाया एकता का पाठ, ६२४ वें प्रकट दिवस पर पढ़ें उनकी जीवनी". जी न्यूज हिंदी,. २०२१–०६–२३. अभिगमन तिथि २०२१–०६–२४.
6. "कबीर दास जी ने रामानंद जी को गुरु बनाने के लिए किया था ऐसा काम, बेहद रोचक है कहानी". ए बी पि न्यज, अभिगमन तिथि २०२३–११–१२.
7. कबीर ग्रन्थावली– पृष्ठ १०४
8. अवधेश प्रसार सिंह केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, युग दृष्ठा कवि कबीर, पृष्ट ४०
9. आचार्य गृधमुनि नाम साहब, सदगुरू कबीर साने प्योनिधि पृष्ट १८८
10. डा. केदार नाथ द्विवेदी, कबीर और कबीर पंथ, पृष्ट १५३
11. डा. राजेन्द्र प्रसाद, कबीर पंथ का उद्भव एंव प्रसार पृष्ट ६२
12. श्याम सुन्दर दास, कबीर ग्रन्थावली, पृष्ट ११२
13. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुकल पृष्ट ६५
14. श्याम सुन्दरदास, कबीर ग्रन्थावली
15. माता प्रसाद, कबीर ग्रन्थावली पृष्ट ६५
16. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुकल पृष्ट ६५
17. बीजक पृष्ट ३८८
18. कबीरदास, कबीर बीजक
19. जयदेव सिंह, कबीर वाणी, पृष्ट १३३
20. डॉ पारस नाथ तिवारी, कबीर वाणी संग्रह
21. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुकल
22. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर ग्रंथावली, पृष्ट ७७–७८
23. https://learnfromblogs.com/hi/सच–बोलने–की–प्रेरणा–देते–प्रेरणादायक–दोहे, अभिगमन तिथि २०२४–०२–०५.